पाठ योजना की आवश्यकता :—

पाठ योजना अध्यापक को इधर - उधर भटकने नहीं देती अपितु उसे शिक्षण की राह पर लगाये रहती है। शिक्षण की क्रिया में पाठ योजना की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से भी है—

पाठयोजना के माध्यम से कक्षा में नियंत्रण रहता है, पाठ योजना के द्वारा कक्षा अनुशासित रहती है, और अध्ययन - अध्यापन विद्यार्थी के अनुरूप होती है। यह कक्षागत परिस्थितियों में समायोजन की संभावनाओं का विकास करती है इससे शिक्षण प्रभावशाली बन जाता है। पाठ योजना पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई के प्रत्येक पद का प्रत्यास्मरण करने में सहायता प्रदान करती है साथ ही अध्यापक का मार्गदर्शन भी। अध्यापक को पूर्व ही शिक्षण की चुनौतियों का आभास हो जाता है और समय रहते वह उसका समाधान निकालकर सफल रूप से कक्षा को संचालित करने में सफल होते हैं। निर्धारित समय, निर्धारित विषयवस्तु, शैक्षिक सामग्री, शिक्षण विधि व अन्य कक्षाकक्ष गतिविधियों आदि के समन्वय द्वारा कक्षा की सार्थकता हेतु पूर्व प्रयास प्रस्तुत करता है।

पाठ योजना का महत्व :—

पाठ योजना के महत्व को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं :—

① उपयुक्त वातावरण :— पाठ योजना में पाठ पढ़ाने के उद्देश्यों को निश्चित करते हुए शिक्षण की विधियाँ, प्रविधियाँ तथा सहायक सामग्री आदि बातें पहले से ही निश्चित हो जाती हैं जिससे विद्यार्थी की पाठ में रुचि उत्पन्न होती है. जब उपयुक्त अथवा शैक्षिक वातावरण तैयार हो जाता है तो शिक्षण कार्य नियोजित ढंग से चलता रहता है।

② पूर्वज्ञान पर आधारित :— पाठ योजना बनाने में अध्यापक नवीन ज्ञान को विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान के आधार पर प्रस्तुत करते हैं। इससे जहाँ एक ओर विद्यार्थी ज्ञान को सहज में ग्रहण कर लेते हैं वहीं दूसरी ओर अध्यापक अपने उद्देश्यों में सफल हो जाते हैं।

③ मनोवैज्ञानिक शिक्षण :— पाठ योजना बनाकर अध्यापक विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए उनकी रुचियों, अभिरुचियों, आवश्यकताओं,

क्षमताओं को दृष्टि में रखते हुए उपयुक्त शिक्षण-नीतियों, प्रविधियों, युक्तियों तथा उपकरणों का प्रयोग करते हैं। इससे शिक्षण मनोवैज्ञानिक हो जाता है।

④ विषय सामग्री का सिमित होना :—

पाठ योजना में विषय-सामग्री परिमित एवं सिमित हो जाती है। इससे जहाँ एक ओर शिक्षक को आवश्यक बातें छोड़ते हुए केवल निश्चित तथा सिमित बातों को याद करने तथा उन्हें विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत करने में आसानी होती है वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों को भी क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित रूप से ज्ञान प्राप्ति में सहायता मिलती है।

⑤ सहायक सामग्री की तैयारी :—

पाठ योजना बनाते समय अध्यापक ये निश्चय कर लेते हैं कि वह कौन-कौन से तथ्यों को कौन-कौन से विधियों, प्रविधियों तथा उपकरणों की सहायता से स्पष्ट करने के लिए किन-किन सहायक सामग्रियों का कब और कैसे प्रयोग करना है इससे आवश्यक एवं प्रभावोत्पादक सहायक सामग्री शिक्षण आरम्भ होने से पहले ही तैयार हो जाती है।

Page No.
Date :

6) शिक्षण कौशल का विकास:-

पाठ योजना शिक्षा में विद्यार्थी शिक्षकों के अन्दर शिक्षण-कौशल को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण साधन का काम करती है।

साथ ही कक्षा को रोचक, व्यवस्थित व अनुशासित रूप से संचालित करने में सहायक होती है, स्पष्ट है कि शिक्षण की सफलता के लिए सुव्यवस्थित पाठ योजना का महत्वपूर्ण स्थान है। इसी विचार को दृष्टि में रखते हुए डेविस महोदय लिखते हैं "कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक को पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए क्योंकि शिक्षक की उन्नति के लिए कोई वस्तु इतनी घातक नहीं जितनी की अपूर्ण तैयारी।"

* —— *